

श्री महावीराय नमः

जैनं जयति शासनम्

श्रीमत् सुदर्शन गुरवे नमः



जैन संस्कार शिविर शिशु-शिक्षा

संस्करण : 2026



A step for the Jain youth of tomorrow

प्रकाशकीय

भारत देश उच्च संस्कृति वाला देश रहा है और इस संस्कृति की उज्वलता बनाये रखने हेतु विभिन्न समाजों में बच्चों व युवाओं को नैतिक व धार्मिक संस्कार प्रदान करने के प्रयास चलते रहते हैं।

पूज्य गुरुदेव संघ-शास्ता शासन-प्रभावक श्री सुदर्शन लाल जी म. सा. के मुनि-संघ के महामुनिराज महास्थविर, गणाधीश श्री प्रकाश चन्द्र जी म., संघनायक 'शास्त्री' श्री पद्मचन्द्र जी म., संघ संचालक मनोहर व्याख्यानानी श्री नरेश मुनि जी म. तथा इनके संघवर्ती अन्य विद्वान् मुनिराजों एवं महासतियों के कृपापूर्ण आशीर्वाद से 'जैन संस्कार शिविर समिति, दिल्ली' द्वारा सन् 2012 से उत्तर भारत के कई प्रान्तों में स्थानीय एस. एस. जैन सभाओं के सहयोग से जैन-संस्कार-शिविर लगाए जा रहे हैं। ये शिविर पूर्णरूप से सम्प्रदाय-निरपेक्ष हैं।

इस पुस्तक के निर्माण में अनेक पूज्य गुरु भगवन्तों व विभिन्न लेखकों की रचनाओं का विनम्र सहयोग लिया गया है। हम उन सब के हृदय से आभारी हैं।

इस पुस्तक को प्रत्येक बच्चा सूक्ष्मता से पढ़े, समझे और उस पर आचरण करे। हमें आशा है कि यह पुस्तक बच्चों तथा युवाओं को जैन धर्म के संस्कार देने में सफल रहेगी।

इसी मंगल मनीषा के साथ...

रवीन्द्र जैन
शिविर-संयोजक

प्रकाशक :

जय जिनशासन प्रकाशन
212, वीर अपार्टमेंट्स, सैक्टर 13,
रोहिणी, दिल्ली-110 085
Mob: +91-98102 87446

Email : jaijinshaasanprakaashan@gmail.com

रूपांकन :

सिस्टम्स विज़न, नई दिल्ली
Mob: +91-98102 12565

मुद्रक :

पारस ऑफ़सेट प्रा. लि., दिल्ली
Email: info@parasoffset.com

विषयक्रम

नवकार मंत्र.....	2
गुरु वन्दना सूत्र.....	2
सामायिक लेने का पाठ (प्रतिज्ञा-सूत्र).....	3
सामायिक पारने का पाठ (समाप्ति-सूत्र).....	3
जैन गुरुओं की सुख-साता पूछने का पाठ	3
24 तीर्थंकर भगवान् के नाम	4
जैन धर्म की बारह शिक्षा	5
Numbers Poem.....	6
हाय-हैलो छोड़िए, जय जिनेन्द्र बोलिए	6
शरीर के अंग.....	7
शिशु-वर्णमाला.....	8



नवकार मंत्र



नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं,
नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व साहूणं ।
एसो पंच नमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

गुरु वन्दना सूत्र

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि
वन्दामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि
कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ।

सामायिक लेने का पाठ (प्रतिज्ञा-सूत्र)

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं मुहूर्तं (1, 2..... उपरान्त काल का संवर) पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, न करेमि-न कारवेमि, मणसा-वयसा-कायसा, तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

सामायिक पारने का पाठ (समाप्ति-सूत्र)

नीवें सामायिक व्रत के विषय, जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं। मन, वचन, काया का खोटा योग बरताया हो । सामायिक में समता न की हो। बिना पूगी पारी हो। दस मन के, दस वचन के, बारह काया के, इन बत्तीस दोषों में कोई पाप-दोष लगा हो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

जैन गुरुओं की सुख-साता पूछने का पाठ

अहो गुरुदेव जी महाराज, (अहो गुरुणी जी महाराज), हम आपके, ज्ञान-दर्शन-चारित्र, तप-सयंम-यात्रा, एवं शरीर की, सुख साता पूछते हैं, और आपके स्वास्थ्य की, मंगल कामना करते हैं, तथा हाथ जोड़कर, मान मोड़कर, मस्तक झुकाकर, तिक्खुत्तो के पाठ से, तीन बार, वंदना-नमस्कार करते हैं।

24 तीर्थंकर भगवान् के नाम



- | | | |
|--------------------|--------------------|----------------------|
| 1. ऋषभदेव जी | 9. सुविधिनाथ जी | 17. कुन्थुनाथ जी |
| 2. अजितनाथ जी | 10. शीतलनाथ जी | 18. अरनाथ जी |
| 3. संभवनाथ जी | 11. श्रेयांसनाथ जी | 19. मल्लिनाथ जी |
| 4. अभिनन्दन जी | 12. वासुपूज्य जी | 20. मुनिसुव्रत जी |
| 5. सुमति नाथ जी | 13. विमलनाथ जी | 21. नमिनाथ जी |
| 6. पद्मप्रभ जी | 14. अनन्तनाथ जी | 22. अरिष्टनेमि जी |
| 7. सुपार्श्वनाथ जी | 15. धर्मनाथ जी | 23. पार्श्वनाथ जी |
| 8. चंद्रप्रभ जी | 16. शान्तिनाथ जी | 24. महावीर स्वामी जी |

जैन धर्म की बारह शिक्षा

1. सदा जीव की रक्षा करना ।
2. मुख से सच्ची बातें कहना ।
3. माँग-पूछकर वस्तु लेना ।
4. सदाचार का पालन करना ।
5. अपनी इच्छा सदा घटाना ।
6. व्यर्थ कहीं नहीं आना जाना ।
7. सीधा-सादा जीवन जीना ।
8. कोई अनर्थ का काम न करना ।
9. नित उठकर सामायिक करना ।
10. जीवन में मर्यादा रखना ।
11. बने जहाँ तक पौषध करना ।
12. अपने हाथों से बहराना ।

Numbers Poem

1	2	3	4	तुम सब करो एक दूजे से प्यार
5	6	7	8	सदा याद रखो सच्चाई का पाठ
9	10	11	12	थूक दो अपना गुस्सा सारा
13	14	15	16	सफल करो मानव चोला
17	18	19	20	मत करो एक दूजे से रीस
21	22	23	24	जैन धर्म के तीर्थकर चौबीस

हाय-हैलो छोड़िए, जय जिनेन्द्र बोलिए

1. सुबह उठें मम्मी से बोलें, जय जिनेन्द्र — जय जिनेन्द्र
2. अपने पापा जी से बोलें, जय जिनेन्द्र — जय जिनेन्द्र
3. दादा और दादी से बोलें, जय जिनेन्द्र — जय जिनेन्द्र
4. भैया से, दीदी से बोलें, जय जिनेन्द्र — जय जिनेन्द्र
5. स्कूल में सर, मैडम से बोलें, जय जिनेन्द्र — जय जिनेन्द्र
6. सभी साथियों से हम बोलें, जय जिनेन्द्र — जय जिनेन्द्र

शरीर के अंग

Uses

Misuses

1. नमस्कार करना ।
2. सबका भला सोचना ।



Head

1. Negative सोचना ।
2. दिमाग गर्म रखना (गुस्सा करना) ।

1. Parents की बात सुनना ।
2. Motivational Speech सुनना ।



Ears

1. छुपकर किसी की बात सुनना ।
2. किसी की बुराई सुनना ।

1. गुरु-दर्शन करना ।
2. अच्छी Books पढ़ना ।



Eyes

1. I-Pad, Mobile देखते रहना ।
2. किसी को बुरी नजरों से देखना ।

1. Respect देकर बोलना ।
2. Prayer करना ।



Mouth

1. गालियाँ देना ।
2. Fast Food ज्यादा खाना ।

1. दान करना ।
2. सेवा करना ।



Hands

1. चोरी करना ।
2. थप्पड़, मुक्का मारना ।

1. अपने धर्म स्थान में जाना ।
2. Walking करके स्वस्थ रहना ।



Legs

1. जीवों को कुचलना ।
2. Fighting करना ।



बुरा मत सोचो ।



बुरा मत सुनो ।



बुरा मत देखो ।



बुरा मत बोलो ।

KIDS' ALPHABET

शिशु-वर्णमाला

A

आतिशबाजी



आतिशबाजी (बम, पटाखे, रॉकेट, अनार) का प्रयोग नहीं करना। इससे—

- 1 धन का नाश होता है।
- 2 वातावरण में जहरीली गैसों फैलती हैं।
- 3 चोट की सम्भावना होती है।
- 4 पशु-पक्षी मरते हैं।
- 5 बीमार लोग परेशान होते हैं।

Aatishbazi

B

बोतल



बोतल (Soft-Drinks) नहीं पीनी। इससे—

- 1 पेट में गैस भर जाती है।
- 2 भूख कम लगती है।
- 3 हड्डियां कमजोर हो जाती हैं।

Bottle

C

कंप्यूटर



Computer

कंप्यूटर को अच्छे काम के लिए प्रयोग करना है। इसमें—

- 1 गलत फिल्म नहीं देखनी।
- 2 अधिक देर तक Game नहीं खेलना।
- 3 अधिक Chatting नहीं करनी।
- 4 गलत दोस्त नहीं बनाने।

D

द्वार



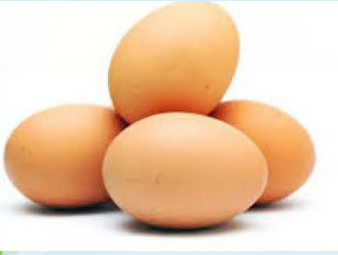
Door

मोक्ष के चार द्वार हैं—

- | | |
|-------|-------------|
| 1 दान | 2 शील |
| 3 तप | 4 शुद्ध भाव |

E

अण्डा



Egg

अण्डे का प्रयोग किसी भी रूप में नहीं करना है।

अण्डे से बने केक, पेस्ट्री, आईसक्रीम, टॉफी, चॉकलेट, च्युंगम, कस्टर्ड नहीं खाने। Egg Shampoo का प्रयोग नहीं करना।

F

फास्ट-फूड



Fast Food

फास्ट-फूड का सेवन नहीं करना है।

समोसा, पकौड़ा, पिज्जा, बर्गर, चाऊमीन, मैगी, टिक्की, सैण्डविच, डोसा, मन्चूरियन, हॉट डॉग इत्यादि फास्ट फूड हैं। इनसे मोटापा, सुस्ती, पेट के रोग, बुद्धि की कमी हो जाती है।

G

गाली



Gaali— Abuse

कभी किसी को गाली नहीं देने है।
इससे—

- 1 झगड़ा हो जाता है।
- 2 वैर-भाव बढ़ता है।
- 3 असभ्यता झलकती है।
- 4 गाली देने वाले का अपमान होता है।

H

होम वर्क



Home-work

स्कूल का काम, जो घर के लिए दिया
जाता है, उसे समय पर पूरा करो ।
इससे—

- 1 पढ़ाई में कभी नहीं पिछड़ते।
- 2 नकल करने से बचाव रहता है।
- 3 कक्षा में सम्मान बढ़ता है।



इन्द्रियां

हमारी पाँच इन्द्रियां हैं।



Indriyaan— Senses

कान (श्रोत्र), आँख (चक्षुः),
नाक (नासिका), जीभ (रसना),
खाल (त्वचा)।

इन पाँचों इन्द्रियों को अच्छे मार्ग पर
लगाना और गलत मार्ग से सदैव दूर
रहना।

J

जय जिनेन्द्र जी

प्रतिदिन 'जय जिनेन्द्र जी' बोलें।



सुबह उठकर, घर में सभी बड़ों को
हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर,
जय जिनेन्द्र जी बोलें।

अन्यत्र भी बड़ों को, तथा फोन पर
सबको भी, यही बोलें।

Jai Jinendra Ji

K

क्रोध



Krodh— Anger

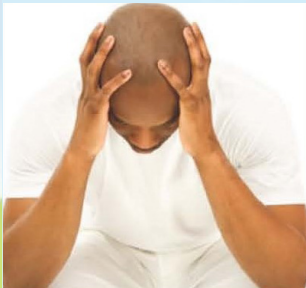
क्रोध कभी नहीं करना।

- 1 क्रोध में भोजन की थाली नहीं फेंकनी।
- 2 घर की चीजें नहीं तोड़नी।
- 3 किसी के बाल नहीं खींचने।
- 4 मुंह चढ़ाकर, रूठकर नहीं बैठना।

L

हानि

Loss से बचें।



Loss

इससे

इसकी हानि होती है

- 1 अधिक टी.वी. देखने से — आंखों की
- 2 अधिक खेलने से — पढ़ाई की
- 3 अधिक बोलने से — सत्य-व्रत की
- 4 शरारत करने से — सुख-शांति की
- 5 झूठा छोड़ने से — अन्न की
- 6 आलस्य करने से — धर्म-कर्म की



M

मोबाइल



- 1 नए-नए मोबाइल नहीं खरीदने।
- 2 मोबाइल पर गन्दी फिल्में नहीं देखनी।
- 3 गन्दे गाने नहीं सुनने।
- 4 अधिक देर तक गेम नहीं खेलने।

Mobile

N

नवकार मंत्र



- 1 यह जैन धर्म का प्रमुख मंत्र है।
- 2 तन को, मन को शांति देता है।
- 3 इसमें 5 पद, 35 अक्षर तथा अन्त में एक गाथा है।
- 4 प्रतिदिन प्रातः एवं सायं 11, 21 या 27 बार अवश्य पढ़ना चाहिए।

Navkar Mantra

O

ओ, ओए



O, Oye

- 1 किसी को भी 'ओ, ओए' कहकर नहीं बुलाना।
- 2 'तू' कहकर बात नहीं करनी।
- 3 आप, जी, सर, मैडम कहना।
- 4 साधु, साध्वी को गुरु जी, गुरुणी जी कहना।

P

पत्थरबाजी



Pattharbazi

- 1 पशु-पक्षी के ऊपर, भिरड़-ततैया, मधुमक्खी के छत्तों के ऊपर, पानी के तालाब आदि में पत्थर नहीं फेंकना।
- 2 पक्षियों पर गुलेल भी नहीं चलानी।



Q

क्यारी



Qyari

- 1 क्यारी में से फूल नहीं तोड़ने।
- 2 वृक्षों की डाली नहीं तोड़नी।
- 3 घास के ऊपर नहीं चलना।
- 4 कूड़े-कचरे में आग नहीं लगानी।

इनमें जीव होते हैं। हिंसा होने से पाप लगता है।

R

रोना, रूठना



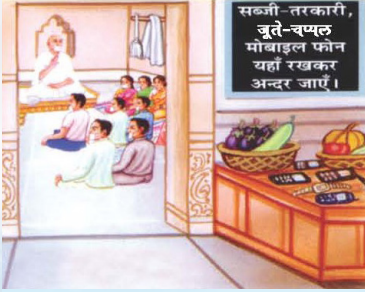
Rona— Crying

- 1 स्कूल जाते समय—
- 2 होमवर्क करते समय—
- 3 मम्मी-पापा का कहना मानते समय—
- 4 माला, सामायिक करते समय—
- 5 स्थानक में जाते समय—

कभी नहीं रोना, कभी नहीं रूठना।

S

स्थानक



Sthanak

- 1 यह हमारा धर्म - स्थान है। यहाँ गुरुजी, गुरुणी जी विराजते हैं।
- 2 यहाँ आकर उनके दर्शन करना
- 3 प्रवचन सुनना।
- 4 स्थानक में शोर नहीं करना।
- 5 खाने-पीने की चीजें गिरा कर गंदा नहीं करना।

T

टेलीविजन



Television

- ज्यादा देर तक टी. वी. नहीं देखना।
- 1 इससे आंखें कमजोर होती हैं।
 - 2 शरीर में मोटापा बढ़ता है।
 - 3 कई बार गलत संस्कार पड़ते हैं।
 - 4 खाना खाते समय भी टी. वी. नहीं देखना।



U

प्रयोग



जब तक कोई वस्तु चले,
उसका प्रयोग करते रहें।
जैसे— कपड़े, किताबें, पैन,
पैन्सिल, जूते, जुराबें आदि।

Use

V

वन्दना



सुबह उठकर, हाथ जोड़कर, सिर
झुकाकर प्रणाम करें—

- 1 माता-पिता, दादा-दादी को।
- 2 घर के बड़े सदस्यों को।
- 3 साधु एवं साध्वियों को।

Vandana

W

पानी



Water

पानी इस प्रकृति का सर्वोत्तम वरदान है।

इसे बिखेरें नहीं, व्यर्थ न बहाएं—

- 1 हाथ-मुँह धोते समय।
- 2 पेस्ट करते समय।
- 3 नहाते समय।
- 4 फर्श धोते समय।

X

व्यायाम



Exercise

सुबह उठकर रोज 10-15 मिनट व्यायाम करना चाहिए।

- 1 गहरी साँस लें।
- 2 ओउम् का उच्चारण करें।
- 3 इससे तन-मन स्वस्थ रहता है।
- 4 बुद्धि तेज होती है।



Y

यतना



प्रत्येक कार्य में यतना-विवेक रखना—

- 1 खाने-पीने में
- 2 पहनावे में
- 3 चलने-फिरने में

Yatna

Z

झूठन



कभी झूठा नहीं छोड़ना—

- 1 खाने-पीने में।
- 2 नाश्ते में।
- 3 पीने के पानी में।

अन्न में सृष्टि के प्राण समाए हैं।
झूठा छोड़ना बहुत बड़ा
अपराध है।

Zhoothan

1. आतिशबाजी (बम, पटाखे, रॉकेट, अनार) का प्रयोग नहीं करना।
2. अण्डे का प्रयोग किसी भी रूप में नहीं करना है।
3. कभी किसी को गाली नहीं देनी है। हमेशा मीठा बोलना।
4. स्कूल का काम समय पर पूरा करना है।
5. प्रतिदिन सुबह सब को 'जय जिनेन्द्र जी' बोलें।
6. कभी भोजन झूठा नहीं छोड़ना, व्यर्थ में पानी नहीं बहाना।
7. स्थानक में आ कर गुरुजी, गुरुणी जी को 'मत्थण वंदामी' कहना।
8. सुबह उठकर रोज 10-15 मिनट व्यायाम करना चाहिए।



परस्यरोपग्रहो जीवानाम्

जैन संस्कार शिविर समिति, दिल्ली के मुख्य उद्देश्य

1. जैन धर्मानुसार जीवन-शैली अपनाकर आनन्द-युक्त जीवन (blissful life) बनाना ।
2. जैन धर्म के समृद्ध इतिहास, संस्कृति, दर्शन और साधना पद्धति को अत्यन्त सरल व आधुनिक तकनीक से सिखाना ।
3. सम्प्रदाय-निरपेक्ष धर्म की सही जानकारी देना ।
4. परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति वफादार और जागरूक नागरिक तैयार करना ।
5. स्वाध्याय-शील बनने की प्रेरणा देना ।
6. भय-मुक्त धार्मिक क्रियाओं की तरफ प्रेरित करना ।

शिशु-शिक्षा